25-2-67 25-2-67

सोशलवर्कर ही सेवा करने वाले को कहते हैं सोशल वर्कर। वो है जिसमानी सेवा यह है रूहानी सेवा। जो कि एक ही बाप सिखलाते हैं। उनको ही सब याद करते हैं। तुम जानते हो हम भक्ति मार्ग में भी भगवान को याद करते थे। इससे सिध होता है कि दो बाप हैं। भक्ति मार्ग में दोनो बाप होते हैं। सतयुग में कितने बाप होंगे? (ऐक) देवतायें अपने बाप को नही जानते? अभी तुम ब्राह्मणों को कितने बाप हैं? (तीन) यहाँ नया कोई सुने तो कहेंगे यह तो नई ही बात है। अच्छा अब बाप कहते हैं तुम याद करते थे कि बाप आप आवेंगे तो आप के ही बनेंगे दूसरा नाँ कोई। तो क्या यह सभी और किसी को याद ही नही करते हैं। याँ कि याद करते हैं परन्तु ऐसे कि नही करते हैं? क्यों कि तुम बच्चे जो देखते हो ऐसे कि नही देखते हो। क्यों कि तुम जानते हो कि इस समय इन आखों से जो देखते हैं उनका विनाश हो जावेगा। और विष्णु पुरी जो दिव्य दृष्टी से देखते हो उसकी स्थापना होनी है। तो ही इस पुरानी दुनियाँ में नष्टोमोहा होकर रहना है। लव एक ही बाप में हो। बाकी तो यह समझते हैं कि यह कर्म बन्धन अब खलास होना है। शरीर भी छोड़ देना है। अशरीरी भी बनना है। बाप यही मेहनत देते हैं। जैसे लौकिक बाप को याद करते हो वैसे ही अपने को आत्मा समझ पारलौकिक बाप को याद करो। ऐसे याद करो जो अन्त काल में भी उन्ही की ही याद रहे। अन्तकाल में नारायण को नही सिमरणा है। अन्त काल में बाप को सिमरना है। ऐसे चिन्तन में जो मरे वो तो 21जन्मों लिये स्वर्ग का राजा बने। नारायण का सिमरण नही करना है। शिव बाबा को याद कर-2 नारायण बनना है। मूल देखो कैसी है। रूहानी बच्चे सब जानते हैं कि रूहानी बाप हमको पढ़ा रहे हैं। बाप दुख हर कर फिर सुख देते हैं। तुम बच्चों की 84जन्मों की कहानी बुधी में है। बाप-2 एक दो को याद दिलाओ अब चलो अपने घर जैसे नाटक पूरा होता है तो घर की याद आती है। यहाँ भी तुम जानते हो कि यह चोला छोड़ कर जाना है। इस पुरानी दुनियाँ की कोई भी चीज में दिल नही लगानी है। इसको नर्क कहाजाता है। पुरानी दुनियाँ में दिल लगावेंगे तो फंस जावेंगे। तुमको दोनो बाप लायक बनाते हैं श्रृंगार करते हैं ससुराल घर जाने लिये। ससुराल घर जाते हैं जरूर वहाँ सुख होगा। रावण राज्य में सुख नही है। ससुर घर में भी दुख ही होता है विकारों में गिर कर। यह आत्माओं और परमात्मा का मेला है जो कि बड़ा सुहावना है। तो खुशी होनी चाहिये नाँ। हम अब जाते हैं बेहद के बाप के पास। दुनी में तो ऐसे कोई समझ नही सकते। तुम आत्माओं की यह है रूहानी यात्रा। बाकी तो वो है जिसमानी यात्रा जिसमें धक्के खाये जाते हैं। यात्रु ऐसा थोड़े ही समझते हैं कि हम वर्सा लेने जाते हैं। दीदार करने जाते हैं। बाप से वर्सा पाना है नई दुनियाँ की राजाई का। वहाँ जाने लिये पावन बनना है। बाप को याद करने से तुम पावन बन जावेंगे। तमोप्रधान से सतो प्रधान जरूर बनना है। जितना याद करेंगे उतना ही खुशी का पारा चढ़ेगा। याद करते-2 इस देह को भी भूल जाना है तुम बच्चों को मेहनत करनी है। यहाँ बाप सम्मुख बैठ समझाते हैं पावन बनने लिये एक ही याद है। जो रस्ता बताते हैं उनका शुक्रिया माना जाता है नाँ। आपका बहुत शुक्रिया जो आप ने हमको बाप से वर्सा पाने का रस्ता बताया। बच्चे जानते हैं कल्प-2 हम बाप से वर्सा पाते हैं। जिन्होंने भक्ति जास्ती की होगी वो ही अच्छी रीती पढ़ेंगे बाप को याद करेंगे ऊंच पद पाने लिये। जितना याद करेंगे उतना ही समझा जावेगा कि इसने भक्ति जास्ती की है। इसी लिये ही बाप की याद आती है। जल्दी कर्मातीत अवस्था को पावेंगे। नब्ज खुद देख सकते हैं जितना याद करेंगे उतनी ही खुशी होगी। याद करना तकलीफ की बात नही है। बाकी हाँ याद में ही माया विघ्न डालती है। ओम्

25-2-67: रात क्लास का बाकी हिस्सा:- सबका एक रस पुरुषार्थ तो हो नही सकता है। कोई टूट पड़े कोई ट्रेटर बन गये। ऐसे दुरसुभाग्य बहुत हैं। उनसे तो बात भी नही करनी चाहिये। सिवाय ज्ञान की बात के कोई बात ही नही करनी है कोई पूछे अन्य बातें तो समझ जाओ की यह कोई शैतान है। संग तारे कुसंग बोरे जो ज्ञान में होशियार बाबा के दिल पर चढ़ा हुआ हो उससे ही बोलो। उनका ही संग करो। वो ज्ञान की मीठी-2 बातें सुनायेंगे। यह है नर से नारायण बनने की सच्ची पाठशाला। भगवानोवाच मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। यहाँ तुम बाप से सच्ची सत्य नारायण की कथा सुनते हो नाँ। ओम